

आवारा कुतों के हमले में घायल युवक को पूर्व मंडल अध्यक्ष ने की सहायता

पिपवार (प्रभात मंत्र संवाददाता) : पिपवार थाना क्षेत्र के टीएच

एलो कालोनी के समीप सोमवार को आवारा कुतों के हमले में बूँद निवासी कृष्ण कुमार साव घायल हो गया थाना तब हुई जब कृष्ण कुमार साव डूटी के लिए जा रहे थे इसी बीच अचानक उन पर आवारा कुतों ने हमला कर दिया और उनके पैर को काटकर जखमी कर दिया। सूचना मिलते ही भाजपा के पूर्व मंडल अध्यक्ष संजीव कुमार मिश्रा ने तुरंत कार्रवाई की ओर घायल कृष्ण कुमार को लेकर चर्चा अस्पाताल पहुंचा। लालिक वहां उंडे यह जानकर निराश हुई कि अस्पाताल में एटी रेबीज टीका उपलब्ध नहीं था। इस स्थिति पर पूर्व मंडल अध्यक्ष संजीव कुमार मिश्रा ने कड़ा रोप व्यक्त करते हुए अस्पाताल प्रबंधन से टीका की उपलब्धता की मांग की। मिश्रा ने कहा कि कॉलोनी में आवारा क्षेत्रीय अस्पाताल में एटी रेबीज टीका की अनुपलब्धता बेहद चिंतिजनक है। उन्होंने घायल को तल्काल टीटी का इंजेक्शन दिलवाया और टड़वा के चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. सुदीप कुमार से संपर्क कर पारा मेडिकल स्टाफ सुरेंद्र कुमार की मदद से कृष्ण कुमार को एटी रेबीज का टीका लगवाया। इस घटना से स्थानीय लोगों में अस्पाताल प्रबंधन के प्रति नाराजी है और आवारा कुतों की समस्या का समाधान करने की मांग की जा रही है।

स्वीप कार्यक्रम के तहत प्रत्यंडों में रंगोली के माध्यम से चलाया गया मतदाता जागरूकता अभियान

खूंटी (प्रभात मंत्र संवाददाता) : विधानसभा निर्वाचन 2024 को लेकर स्वीप कार्यक्रम के तहत जिले में

प्रतिदिन विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से मत दा ता जागरूक कराया गया। इस दौरान एक से बढ़कर एक रंगोली बनाकर आमजनों को खूंटी एवं तोरपा विधानसभा क्षेत्र में 13 नंबर करों को होने वाले मतदाता के दिन अपने मताधिकारका प्रयोग अवश्य करने के लिए प्रेरित किया गया। साथ ही मतदाता की विशेषता बताते हुए सभी को मतदाता प्रतिज्ञा दिलाया गया एवं लोकतंत्र के इस महापर्व में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने को कहा गया।

छात्रों को भ्रष्टाचार के खिलाफ सत्यनिष्ठा एवं ईमानदारी की दिलाई गई शपथ

मूरी (प्रभात मंत्र संवाददाता) : सत माइकल स्कूल, मूरी में सोमवार

को छात्रों को युविन बैंक मूरी शाखा के प्रबंधक दिलेश कुमार के द्वारा भ्रष्टाचार के खिलाफ सत्यनिष्ठा एवं ईमानदारी की शपथ दिलाई गई। इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शाखा प्रबंधक ने कहा कि भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई को प्राप्ति नाराजी को सहत हो सकता। नागरिकों को समाज में फैले भ्रष्टाचार को खत्म करने के अधियान में सबको मिलकर अपनी सहभागिता निभानी होगी एवं प्रत्येक नाराजी को सतर्क होगा। इस कार्यक्रम में शामिल सभी शिक्षकों को खत्म करने के अधियान में बढ़ावा दिलाया गया। इस शपथ के दिन अपने मताधिकारका प्रयोग अवश्य करने के अधियान में सबको मिलकर अपनी सहभागिता निभानी होगी एवं प्रत्येक नाराजी को सतर्क होगा।

सिल्ली पुलिस ने अवैध रूप से चल रहे तीन संचालित शराब भड़ियों को किया नष्ट

सिल्ली (प्रभात मंत्र संवाददाता) : सिल्ली थाना क्षेत्र के ग्राम टेटेबंदा

और लोसरा में रविवार को अवैध रूप से संचालित तीन शराब भड़ियों पर सिल्ली पुलिस की बड़ी कार्रवाई। तीन संचालित शराब भड़ियों में दो हजार किलो जावा महुआ और तीस लीटर महुआ शराब को जस किया गया। शराब भड़ियों को भी पुरी तरह से ध्वस्त कर दिया गया। पुलिस द्वारा छपेमारी के दौरान शराब भड़ियों से कई प्रकार के बरंगे एवं कोयला को जस किया गया। वर्तमान अवैध रूप से ध्वस्त कर दिये गये थे। शराब करोंगी में हड्डीकप मच गया। शराब बना रहे लोग पुलिस को देखते ही भग निकला। सिल्ली थाना प्रभारी दिनेश तांडुके ने बताया कि वरीय पुलिस अधीक्षक रोडी के निवेशनुसार यह कार्रवाई की गई है। आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर अवैध शराब के विरुद्ध लालातार कार्रवाई की जा रही ऐसी कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी। छपेमारी दूर में सब इंस्पेक्टर मुकेश कुमार एस आई हेंब्र में पुलिसकर्मी मौजूद थे।

जेएन फाउंडेशन की ओर से बृजकिशोर नेहरून

विद्यालय में 1 किंतुल वावल की मदद

रांची (प्रभात मंत्र संवाददाता) : जेएन फाउंडेशन की ओर से

बृज किंतुल वावल की मदद की गई। मौजूदे पर

फाउंडेशन के प्रेसिडेंट सहित डॉक्टर तथा

मेंबर चंद्रन, जैशन सूखसार तथा विद्यालय की सहायक शिक्षक व शिक्षिका भी मौजूद थीं। सबने बच्चों संग अन्ताश्री खेल कर बच्चों का खूब मन बहलाया। फाउंडेशन के मेंबर ने कहा कि वे आगे भी ऐसी ही मदद की मुहिम चलाने रहेंगे।

पिपवार (प्रभात मंत्र संवाददाता) : जेएन फाउंडेशन की ओर से

बृज किंतुल वावल की मदद

विद्यालय में 1 किंतुल वावल की मदद

जैशन सूखसार तथा विद्यालय की मदद

व

विचारप्रवाह

पूरे राज्य में सैकड़ों घटनाएं ऐसी हुईं जबकि भाजपा प्रत्याशी को चुनाव प्रचार बीच में छोड़कर ही वापस आना पड़ा
हरियाणा चुनाव परिणाम : इस घर को आग लग गई घर के चराग़ से

निर्मल रानी

हरियाणा

में जंहां कांग्रेस – नेशनल कॉर्निस (ईंडिया) गठबंधन ने जी हासिल की है वहीं हरियाणा में कांग्रेस के दस सालों बाद सत्ता वापसी की लगाई जा रही तभाये अटकलों, संभवानाओं, भविष्यवाणियों यहाँ तक कि लगभग सभ एजेंसियों द्वारा दिए जा रहे एजिट पोल के बावजूद भारतीय जनन पार्टी राज्य के इतिहास में हफ्तों बार एक ऐसा राजनीतिक दल साबित हुआ जिसने लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी की हो। राज्य भाजपा विरोधी लहर के कई प्रमुख थोस कारण थे। इनमें पहला सब बड़ा कारण इस कृषि बाहुल्य राज्य के किसानों की भाजपा व जबरदस्त नाराजगी थी। साथ ही अग्निवारी योजना को लेकर भी यह के युवाओं में काफी रोष था। महिला पहलवानों के अपमान को लेकर भी राज्य में काफी नाराजगी थी। यह नाराजगी केवल किसी पूर्वाग्रह पक्ष द्वारा प्रचारित की जा रही जबरदस्ती या दिखावे की नाराजगी नहीं थी बल्कि जनता का यह रोष उस समय सिर चढ़कर बोलता था जबकि जनता के इसी विरोध के चलते राज्य के अधिकांश भाजपा उम्मीदवारों को चुनाव प्रचार के दौरान जनता के विरोध प्रशंसनों काले झांडों का सामना करना पड़ता था। पूरे राज्य में सैकड़ों घटनाएँ हुईं जबकि भाजपा प्रत्याशी को चुनाव प्रचार बीच में छोड़कर हवापास आना पड़ा। भाजपा के बड़े से बड़े स्टार प्रचारकों को सुनने वे लिये जुटने वाली कम थी भी यही इशारा कर रही थी कि राज्य के मतदाता भाजपा को सत्ता से उत्थाड़ फेंकने के लिये कमर कस चुनौती हैं। कांग्रेस ने तो इन नतीजों को परिधारित करते हुये कहा है कि – यह तंत्र की जीत और लोकतंत्र की हार है, हम इसे स्थीकार नहीं कर सकते। और 'हम इन सारी शिकायतों को लेकर चुनाव आयोजित करेंगे।' बहरहाल जो विश्लेषक व समीक्षक कल तक हरियाणा कांग्रेस को प्रचड़ बहुमत दिला रहे थे और भाजपा को 15 से बीस सीटों पर धकेल रहे थे वहीं लोग अब भाजपा की अप्रत्याशित वापसी के कारण खोजने में जुट गए हैं। अनेक विश्लेषकों का मानना है कि भाजपा ने गैर जाट वोट बैंक तैयार कर उनका ध्वनीकरण इतना

खामोश व चुनुरुही से किया कि विषयक उस भाग ही नहीं पाया। मैं कंग्रेस नेताओं की आपसी कलह को भी कुछ लोग इस ही जिम्मेदार बता रहे हैं। परन्तु हकीकत यह है कि हरियाणा में भक्ति की वापसी का सबसे बड़ा कारण भाजपा विरोधी मर्मों का विभाजन खासकर आम आदमी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, आजाद (चंद्रशेखर रावण), जन नायक जनता पार्टी, इनलों जैसे दल भाजपा विरोधी स्वरों के साथ चुनाव तो ज़रूर लड़े परन्तु हकीकत इनके मर्मों के विभाजित होने के कारण ही भाजपा बहुमत के अंत तक पहुँच सकी। अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी इण्डिया गठबंधन का हिस्सा भी ही है उसने तो हठधर्मिता की सभी पार करते हुये राज्य की सभी सीटों पर अपने उम्मीदवार खेल दिये। परिणाम यह निकला कि उसके तो सभी उम्मीदवार जमानत जब्त हो गयी। परन्तु इससे भाजपा को यह फ़ायदा हुआ कि भाजपा ने अनेक सीटों पर मात्र 2-3 हजार मर्मों से जीत की। यानी उतने ही वोट आप ले गयी। यदि कंग्रेस के साथ आसीट बंटवारा हो गया होता और आप अपनी हैसीयत से अधिक के लिए जिद न करती तो नतीजे कुछ और ही हो सकते थे। मर्मों बात तो यह भी है कि इन चुनावों को केजरीवाल ने अपनी ईमानदारी का प्रमाणपत्र समझ रखा था। उन्होंने कहा था कि 'इन चुनावों में की जनता अपने वोट के माध्यम से ही यह बताएगी कि हम इन ईमानदार हैं' तो अब हरियाणा में आप के सभी प्रत्याशियों जमानत जब्त होने का क्या अर्थ निकला जाये ? आप के चु

ପାଠୀ

फिजिकल व अन्य विषय पढ़ाने के लिए उस विषय का दक्ष सिक्षक नियुक्त होता है। जिन खेलों में हम विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने की बात करते हैं, उनके लिए भारत में किंतने प्रशिक्षक नियुक्त हैं? किसी भी विषय को सही तरीके से पढ़ाने के लिए उस विषय का शिक्षक जरूरी होता है। उसी तरह हर खेल को सिखाने के लिए उस खेल का प्रशिक्षक चाहिए होता है। विद्यालयों व महाविद्यालयों में नियुक्त शारीरिक शिक्षा के शिक्षक इस कार्य को नहीं कर सकते हैं। इसलिए अलग से राज्यों में खेल विभागों का गठन हुआ। आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेल परिणाम अपने उच्च स्तर तक पहुंच गए हैं। इस स्तर को प्राप्त करने के लिए राज्य में जहां जिस जिस खेल की सुविधा उपलब्ध है, वहां पर उस खेल का प्रशिक्षक नियुक्त होना चाहिए। आज हिमाचल प्रदेश में विभिन्न स्थानों पर विभिन्न खेलों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्ले फील्ड उपलब्ध हैं। वहां पर सम्मानजनक तरीके से प्रशिक्षकों की नियुक्ति होनी चाहिए।

प्राशक्षक कड़र के साथ अन्याय क्या

की पदान्वति व पर्यं सैनिक आरक्षण पदा पर नियुक्त प्रशिक्षकों का दशकों बाद भी वेतन निर्धारण नहीं हुआ है। हिमाचल प्रदेश में खेलों के उत्थान के लिए अस्सी के दशक के शुरू में हिमाचल प्रदेश युवा सेवाएं एवं खेल विभाग का गठन हुआ। इस विभाग में निदेशक, संयुक्त निदेशक, उप निदेशक, जिला युवा सेवाएं एवं खेल अधिकारियों, प्रशिक्षकों, कनिष्ठ प्रशिक्षकों व युवा संयोजकों के पद सृजित हैं। विभाग का कार्य प्रदेश में युवा गतिविधियों व खेलों का विकास करना है। हिमाचल प्रदेश में यह विभाग खेल प्रशिक्षण, खेलों के लिए आधारभूत ढांचा व राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेता होने पर नगद पुरस्कार व अवार्ड देने के लिए बनाया गया है। हिमाचल प्रदेश के इस विभाग का निदेशक प्रशासनिक सेवा से ही अधिकतर नियुक्त होता रहा है। केवल विशेष परिस्थितियों में ही आज तक दो बार ही विभागीय अधिकारी निदेशक पद तक पहुंच पाए हैं। उपनिदेशक और कभी-कभी संयुक्त

संस्याजक पदानन्त हाकर पहुच जाते हैं। इन विभागीय अधिकारियों को अधिक तकनीकी जानकारी होती है। दो वर्ष पूर्व हुई एक उपनिदेशक की सेवानिवृत्ति के बाद अब तक हिमाचल प्रदेश युवा सेवाएं एवं खेल विभाग के पास कोई भी उपनिदेशक नहीं है। नियमित जिला युवा सेवाएं एवं खेल अधिकारी भी केवल चुनिंदा ही जिलों में हैं। राज्य के शेष जिलों में कामचलाऊ अधिकारी बिठा रखे हैं। सरकार को चाहिए कि जल्दी ही उपनिदेशक के पद पर नियमित पदानन्ति की जाए तथा जिलों में भी नियमित अधिकारी हों। इस समय जो प्रशिक्षक जिला युवा सेवाएं एवं खेल अधिकारी के पद पर तर्दध कार्य कर रहे हैं, उन्हें एकमुश्त नियमों में छूट देकर नियमित अधिकारी बना दिया जाए। विभाग में नामामत्र के प्रशिक्षक हैं। अधिकतर खेलों में तो एक भी प्रशिक्षक पूरे जिले के लिए उपलब्ध नहीं है। विभाग में जो प्रशिक्षक नियुक्त हैं, उन्हें कनिष्ठ प्रशिक्षक के पद पर नियुक्त मिली है। उसके बाद वे सेवानिवृत्ति तक भी

प्रशिक्षकों का जिला युवा सेवाएं एवं खेल अधिकारी पद पर पदोन्नति के लिए केवल 25 प्रतिशत ही कोटा है। 50 प्रतिशत युवा संयोजक व 25 प्रतिशत पद हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग के माध्यम से भरे जाते हैं। प्रशिक्षक बनने की योग्यता बहुत कठिन है। स्नातक डिग्री के साथ जो प्रतिभागी अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी हो या तीन बार वरिष्ठ राष्ट्रीय प्रतियोगिता में प्रतिनिधित्व किया हुआ हो या शारीरिक शिक्षा में स्नातकोत्तर डिग्री के साथ अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में खेला हो, उसके बाद राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान में प्रवेश परीक्षा पास कर एक वर्ष के कठिन प्रशिक्षण व शिक्षण के बाद प्रशिक्षक बनता है। पिछली बार हुई भर्ती में विभाग ने नियमों को ठेंगा दिखा कर छह सप्ताह में प्रशिक्षण पूरा किए सर्टिफिकेट कोर्स बाले को प्रशिक्षक भर्ती कर दिया है। सेवा नियमों में एक समय एमपी एड के साथ कंडैस कोर्स जो छह माह का होता था, उसे पास किया हुआ प्रशिक्षक के पद के लिए कार्यक्रम किया हुआ। भविष्य में इस तरह का गोलमाल नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे हिमाचल प्रदेश की खेल जगत में काफी बढ़िया उड़ी है। हिमाचल प्रदेश सरकार को चाहिए कि वह प्रदेश में नियुक्त कमिष्टी प्रशिक्षकों को पांच साल के बाद प्रशिक्षक के पद पर पदोन्नति कर 50 प्रतिशत कोटा जिला अधिकारी पद पर पदोन्नति के लिए दिया जाए, क्योंकि प्रशिक्षकों की संख्या बहुत अधिक है। अगर हर खेल में जिला स्तर पर पांच प्रशिक्षक भी हों तो प्रशिक्षकों की संख्या सौ से भी अधिक जा सकती है। इसके मुकाबले बाहर जिलों में बाहर ही युवक संघोंका नियुक्त हैं। इस तरह देखा जाए तो यह प्रशिक्षकों के साथ बहुत अन्यथा है प्रदेश में विभिन्न खेलों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्लेट फील्ड तो पूर्व मुख्यमंत्री प्रो प्रेम कुमार धूमल के कार्यकाल में बन गई थी, मगर उनका न तो सही रखरखाव है और न ही उन पर उस स्तर का प्रशिक्षण कार्यक्रम हो रहा है।

30

ॐ श्रीवान्मारुते

हत्यकार थे। दोनों पक्के तथा थे। एक का नाम मगन

दास्त था। एक का नाम मगन लाल तथा दूसरे का नाम छगन लाल था। दोनों स्वयं को साहित्य का सपूत तथा महान लेखक मानने की भूल भी पाले हुए थे। एक साहित्यिक गाढ़ी में मैंने दोनों को देखा, दोनों प्रिंटर्डर्म का निर्वाह बखूबी कर रहे थे। मगन लाल ने छगन लाल को महान बताया तो छगन लाल ने मगन लाल को एक मात्र ऊर्जावान लेखक ठहराया। उन दोनों का मानना था कि राज्य में तमाम साहित्यकारों की ऊर्जा समाप्त हो गई है तथा इदं ऊर्जा बची है तो केवल उन दोनों के पास। उनका तर्क था कि लघु पत्रिकाएं बंद हो जाने से साहित्य की बहुत हानि हुई है, यदि आज वे होतीं तो वे दोनों अपनी रचनाएं उनमें छपवाकर अपनी ऊर्जा को और अधिक तेज बनाए रखते। पंतु व्यावसायिक पत्र-पत्रिकाओं के दलदल में फंसकर साहित्य का सत्यानाश हो गया है तथा उनके लिए व्यर्थ का 'काम्पीटीशन' बढ़ गया है। मित्रों की लघु पत्रिकाओं में छपना आसान होता है तथा उहें किसी संघर्ष व साधना की जरूरत नहीं होती। मैं सदैव महान साहित्यकारों का अनुगामी रहा हूँ तथा उनसे कुछ सीखने की लालसा भी रखता हूँ। इसलिए एक दिन मैंने उनसे साक्षात्कार का मूड़ बनाया और जा पहुँचा छगन लाल जी के निवास पर। मगन लाल जी भी वहीं मिल गए। दोनों पहुँची हुई आत्माओं को एक साथ पाकर मन गदगद हो गया। दोनों को सादर प्रणाम के बाद मैंने अपना मंतव्य बताया तो वे बल्लियों उठल गए और बोले, 'भाई पूछो, हम तो साहित्य-चर्चा को सदैव लालायित रहते हैं।' मैंने कहा, 'मगन लाल जी साहित्य में बड़ा घान-मसान हो रहा है, आपकी क्या राय है इस बारे में?' मनचाहा प्रश्न पाकर खुल

सांप्रदायिकता की आग को हवा देकर मनुष्य को मनुष्य से दूर का 'खेल' हमारी राजनीति का आजमाया हुआ हथियार रहा है। आजादी से पहले और आजादी प्रकरणे के बाद भी अक्सर हमारे धर्म के नाम पर समाज को बांटने काम राजनीतिक ताकतें करती रहे हैं। यह खतरनाक 'खेला' कितन राजनीतिक लाभ देता है या दे सकता है, यह कोई इच्छिया हुई बात नहीं है सच तो यह है कि सांप्रदायिकता जातीयता के नाम पर बोटों की राजनीति सब कर रहे हैं। यथा यह सच्चाई नहीं है कि हमारे राजनीतिक दल उम्मीदवारों के चयन का आधा ('मैंने तो ऐसी संभावना की है कि')

हाँ रहा हूँ वह काँ न नई बात न
संप्रदायिकता की आग को हवा देकर मनुष्य
से दूर करने का 'खेल' हमारी राजनीति का
हुआ हथियार रहा है। आजादी से पहले अंत तक
प्राप्त करने के बाद भी अक्षर हमारे यहां धर्म
समाज को बांटने का काम राजनीतिक ताक़त का
है। यह खतरनाक 'खेला' कितना राजनीतिक है
यह दो सकता है, यह कोई छिपी हुई बात नहीं
यह है कि सांप्रदायिकता और जातीयता के न
की राजनीति सब कर रहे हैं। क्या यह सच्चा
हमारे राजनीतिक दल उम्मीदवारों के चयन
'जीतने की संभावना' को बताकर जातीयता
ही सहारा लेते हैं। कौन-सा दल ऐसा है
उम्मीदवार तथ करने के लिए यह नहीं देख
विशेष में किस जाति या धर्म के लोग अधिक हैं?
यह एक पीड़ादायक सच्चाई है कि विविध
ताकत देखने वाला हमारा देश धर्म, ज
क्षेत्रीयता आदि के आधार पर भीतर ही भीतर
बंटा जा रहा है? हमारे राजनेता कुछ भ
राजनीतिक नफे-नुकसान का गणित अ
आधारों पर तय होता है। यह एक शर्मनाक स
कितनों को शर्म आती है इस सच्चाई पर? स
कि हम इस सच्चाई से रुबरु होना ही नहीं त
ऐसा न होता तो कभी तो हम अपने राजनेता
कि उनकी कथनी और करनी में इतना अंत
क्यों अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिए वे धर्म
नाम पर बंटने के खतरों को समझना नहीं च
भाजा वाले कांग्रेस पर यह आरोप लगाते न
वह तुष्टिकरण की राजनीति करती रही है,
रही है, और दूसरी ही सांस में उनकी सरकार
बहुसंख्यकों को रिझाने में लगी दिखती है और
अल्पसंख्यकों पर डोरे डालती! उत्तर प्रदेश
की राजनीति का खेल हम अरसे से देखते चलते
'मदरसों की राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों' का
से न थकने वाल जब महाराष्ट्र में चुनाव
मौलवियों का वेतन बढ़ाते दिखते हैं, हाँ र
दोमुंहाप्न छिपाये नहीं छिपता। सबको उनका
उचित वेतन मिलने का नहीं है। सबको उनका
मिलना ही चाहिए, पर जब दूसरे द्वारा किय
'रेवड़ी बांटना' लगे और स्वयं वही काम क

लग रहा। तो मनुष्य भाजमाया आजादी नाम पर रक्तरी हरी लाभ देता है। सच तो पर वोटों में ही कि आधार धर्म का अपना कि क्षेत्र वावशाली में अपनी भाषा, लगातार कहें, पर मर इन्हीं इह है। पर तो यह है हते यदि से पूछते क्यों हैं? जाति के तो जाति के तो आज यकते कि भी कर एक तरफ सरी और मदस्सों आ रहे हैं। बाला देने मद्देनजर नीति का वियों को विचित देय गोई काम न 'न्याय कहा जाएगा? हाल ही मं एक सौराजन उच्चतम न्यायालय ने यह धर्म को राजनीति से दूर रखा जा रहा कब नहीं की थी? और कब हुई? जब बड़े-बड़े राजनेता चुना आधार पर लोगों को फहान मंगलसूत्र छीनने का हवाला देते नाम पर राजनीति करते हैं, तो सब कि यह सब कहें का अधिकार दिया जाये? जब हमने आजादी की धर्मीनरपेक्षता का रास्ता चुना था। देश की जनता सर्वधर्म समभाव बना करती है लेकिन, आज भी कुछ वे बंटवारे के समय रह गए कथित वक्त की दुहाई दे रहे हैं! क्या अर्थ है इसक्या हैं? और क्योंऐसी बात कहने किया जाता? बहुसंख्यकों को एक हवाला देने वालों को यह क्यों नहीं विश्वास, भगवान और राजनीति की मिटायी जा रही हैं? जीवन में यह अपना स्थान है—इन्हें राजनीति तराजू पर नहीं तोला जाना चाहिए, करने वालों की संख्या बढ़ती जा रही बिना किसी हिचकिचाहट के हम मुख्यमंत्री अपने राज्य में मौजूद आश्वासन दे रहा है तो कहीं रुका राजनेता धार्मिक नारे लगवाना जाएगा? इसकी वजह से हम हाद तो तब हो जाती है जब 'ईश्वर' कहना भी किसी राजनेता के खत्ते शिकायत यह है कि राष्ट्रपिता बाला शब्द तो मूल भजन में थे वह मानसिकता के अलावा और क्या यह देश 140 करोड़ भारतीयों के लिए इसकी पहचान को किसी धर्म की जाने की कठीन आवश्यकता नहीं है। को मानने वाले क्यों न हों, मूलत हमें इस बात पर गवं होना चाहिए और आदर की दृष्टि से देखते हैं। इश्वर पहुंचने का मार्ग है। मार्ग भले ही लक्ष्य पर हैं। सब पहुंचाते एक ही लक्ष्य पर हैं।

कानों के लंबित सफों की अंदरूनी परख अगर है

वाटर सेस एक कानूनी मामला

इसकर अदालत की सीनि

फेसल गया, लाकन यह हिमाचल का आधिकार आईना है, जिस थू हार नहीं तोड़ा जा सकता। ऐसे में हिमाचल सरकार पानी की जिरह की मजबूती के उद्देश्य से तत्संबंधी सभी कानूनों की झाड़पौछ करके, एक अंबेला एक्ट की शक्ति में सशक्त कर रही है। यह हार नहीं मानने का जज्बा है, जो वर्षों की गाद से लड़ रहा है। संघर्ष के पांच अपना दर्द या रास्ता नहीं देखते, मंजिलों को आबाद करना है तो निरंतर प्रयास करना होगा, लेकिन इस परियाटी में केवल शिखर नहीं, जमीन को भी तपना पड़ेगा। हमें यह तो मालूम नहीं कि अंबेला एक्ट के बदौलत वर्षों से जनरेशन टैक्स की राह खोज रहा हिमाचल कहां तक सफल होगा, लेकिन इतना तय है कि इस केस की केस स्टडी अपनी सार्थकता का भूगोल पैदा कर रही है। अंततः सवाल हिमाचल को आत्मनिर्भर बनाने का है, तो प्रयास भी इसी उत्कंठा से करने होंगे। हिमाचल को आत्मनिर्भर बनाने के लिए जमीन-आसमान एक करने के लिए यहाँ की आबोहवा, जंगल और पानी के योगदान का विस्तार व मूल्यांकन जरूरी है। यानी आबोहवा अगर पर्यटन के माफिक रख पाए, तो यह उद्योग आर्थिकों को ऐसे स्थान पर पहुंचा सकता है, जहां रोजगार व स्वरोजगार प्रदेश की युवाशक्ति को सफल होने का हर अवसर मुहैया करवा सकता है। विडबना यह है कि पर्यटन की आबरू का चीरहण करते हुए हम जिन मंजिलों को तराश रहे हैं, वहां दृश्यावलियों से छेड़छाड़ रुकनी चाहिए, वरना सारे मकसद एक समय धराशायी हो जाएंगे। इस आबोहवा का बेहतर इस्तेमाल होना चाहिए, न कि पर्यटन के दबाव में सब कुछ नष्ट हो जाए। इसलिए हम पांच करोड़ पर्यटकों के बजाय एक करोड़ पर्यटकों की पांच रातें और दिन बढ़ाने की वकालत करते हैं। दूसरा आर्थिक स्रोत जंगल में जाया हो चुकी जमीन है। प्रदेश की सतर फीसदी जमीन के बजाय अगर पचास प्रतिशत भूमि वन के नाम रह जाए, तो अतिरिक्त बीस फीसदी जमीन हासिल करके हिमाचल को नई आर्थिक संरचना करनी चाहिए। प्रदेश की आत्मनिर्भरता का झगड़ा जमीन की अनुपलब्धि से है। हम बनापतीयों के मारे अपने होने का सबूत कैसे दें। अंततः किसी दिन संघर्ष की डिलियां जंगल की उस जमीन पर उगानी पड़ेंगी, जो विकास की बाढ़बंदी करने पर आमादा है। इतना ही नहीं हिमाचल के जंगलों को चीड़ से हटाकर चारे, चाय, काफी या जड़ी-बूटियों से जोड़कर पर्वतीय आर्थिकी का संचार हो सकता है। अंत में पानी हमारी आशाओं की किश्ती को ढो सकता है। पहले एक बार शोता कुमार की वजह से विद्युत उत्पादन की मुफ्त रॉयल्टी से संबंध मिला था। दूसरी बार प्रेम कुमार धूमल ने 23 हजार मेगावाट विद्युत क्षमता के उत्पादन का शपथपत्र तैयार करके रास्ता दिखाया, लेकिन अब बाटर सेस की परिभाषा जलाधिकार को पुकार रही है।



भारत में नवीनीकृत चिकित्सा उपकरणों के अवैध आयात पर जनहित याचिका दायर

रांची(प्रभात मंत्र संघटनाता): नवीनीकृत चिकित्सा उपकरणों की बढ़ती प्रवृत्ति रोगी सुख के साथ के लिए महत्वपूर्ण जाँचियम प्रस्तुत करती है और इन उपकरणों की विश्वसनीयता और प्रभावशालीता के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्न उठाती है, जो स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के लिए महत्वपूर्ण है। भारत फारंडेन का फैशेंसे इन्हिंसेस इन्शिएटिंग (पीएसएआईआईएफ) ने दिल्ली उच्च न्यायालय में एस्सेस इन्शिएटिंग (पीएसएआईआईएफ) के विकास याचिका दायर की, जिसमें नवीनीकृत चिकित्सा उपकरणों के आवाम में कई उद्धेष्यों और अनुभाव की कमी का हवाला दिया गया। अदालत के आदेशों के अनुसार, पीएसएआईआईएफ को हाल ही में स्वास्थ्य सेवाओं के महानिदेशालय (डीजीएचएस) और पर्यावरण, बन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमएस ईंफर्मेसी) से प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई हैं। इस मामले पर बोले हैं, पीएसएआईआईएफ के संस्थापक फैशेंसे बेजों कुपया मिश्र ने कहा कि चौथी जनवार अदालत के आदेशों के अनुसार प्राप्त है, इस पर तब तक कोई बयान नहीं दिया जा सकता जब तक कि इस पर निर्णयिक कानूनी सतान होनी ली जाती। आवश्यक स्वीकृति प्राप्त किए जिन भारत में नवीनीकृत चिकित्सा उपकरणों का अवैध आयात एक गंभीर मुद्दा है जो सर्वजनिक स्वास्थ्य, विनियामक अधिकारी और भारत की आमने-अस्थिति के लिए महत्वपूर्ण चिंताएँ पैदा करता है। प्राफेसर ने आगे कहा, याचिका दायर के प्रतिवादियों के निर्देश देने की मांग की गई है कि वे सभी सेकेंड-हाई-एंड हाई-वैल्यू (एमएसएचवी) प्रयुक्त चिकित्सा उपकरणों की पहचान करें और उन्हें प्रस्तुत करें, जो कि क्रिटिकल केरें मेडिकल उपकरणों के अलावा 2019 से भारत में पर्यावरण बन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमएसएचवीसी) की अनुमति के बिना आयात किए गए हैं और इट्यूटिव संसिद्धि के सहित कांपियों के निर्देश दें गए हैं कि वे ऐसे सभी रोकर्बिंग एचवीएचवी के उपकरणों को तुरंत वापस बुलाएं जो नियमों और विनियोगों के अनुसार पूर्ण अनुबुद्धि के बिना स्थापित किए गए हैं।

डॉ. शैलेश चंद्रा 1 साल की उम्र के बाद बच्चों के स्वस्थ विकास के लिए 7 जर्सी टीके

रांची(प्रभात मंत्र संघटनाता): भारत में एक साल से कम उम्र के बच्चों में टीकाकरण का कवरेज अच्छा है, लेकिन एक साल की उम्र के बाद टीकाकरण कवरेज में गिरावट आने लगती है। इस कारण से देश में बहुत से बच्चों का अशोक टीकाकरण ही हांकर रह जाता है। बच्चों का उनके पहले जन्मदिन के बाद भी कुछ महत्वपूर्ण टीके लगवाना जरूरी है, जिससे कुछ गंभीर बैक्सीन प्रिवेटेल डिपीज के खिलाफ उनकी इन्यूनिटी मजबूत हो। और उन्हें खुबी एवं स्वस्थ भविष्य मिल सके। ईंडियन एकेडमी आफ पीडीएसीटिक्स (आईएसी) ने 1 से 2 साल की उम्र के बच्चों के लिए 7 जर्सी टीकाकरण की सिफारिश की है वैचिनपार्सिस एवं एक दो डोज, मैनिंजाइटिव्स और एमप्रेसिएर की टूसरी डोज, पीसीवी एवं डीटीपी एचवीएचवी आईपीवी की टूसरी डोज और फ्लू की सालाना डोज। ये 7 जरूरी टीके बच्चों का चिकनपार्सिस, हेपेटाइटिस बी, मैनिंजाइटिव्स, मीजस्ट, मम्प, रुबेला, न्यूमोनिया, इम्पलाजा, डिपीरिंग, इट्टनस, परद्यूसन, पोलोनी और एचवीएचवी इफेक्शन विलेन हाईस्पिटल के कंसल्टेंट डॉ. शैलेश चंद्रा ने कहा, "कई मातापिता टीकाकरण के दुष्प्रभावों को लेकर चिंतित होते हैं और बच्चों को सभी जरूरी टीके नहीं लगवाते। वे बच्चे के पहले जन्मदिन के बाद से उसे कई महत्वपूर्ण टीके नहीं लगवाते हैं। बच्चों की सेहत एवं सुख सुनिश्चित करने के लिए ईंडियन एकेडमी पीडीएसीटिक्स ने 1 से 2 साल की उम्र के बच्चों के लिए 7 टीकों की सिफारिश की है, जो 1 वीमार्पण से बढ़ती है। बच्चों का समय से ऐसे पूरे टीकाकरण के महल के बारे में जानने के लिए प्रत्येक मातापिता को अपने पीडीएसीटिक्स से बात करनी चाहिए।"



बारलोंग का गैर मजरूआ व बकास जमीन दलालों के हाथों नहीं बिकने देंगे : मुख्यिया रेखा

प्रभात मंत्र संघटनाता

रामगढ़ : रामगढ़ प्रारंभ श्वेत के बारलोंग पंचायत के गैरमजरूआ व बकास जमीन खरीद- बिक्री पर जोरदार तरीके से होगा ग्रामीणों ने विरोध करता जताया है बारलोंग पंचायत मुखिया रेखा देवी ने जबकी की पिछले दिनों बारलोंग एवं खाता संख्या 313 कुल कर्वा 1 लाठ डिस्पर्मिल बकास जमीन एवं खाता संख्या 1 लाठ संख्या 314 रकवा 5 डिस्पर्मिल गैरमजरूआ जमीन को दलालों के द्वारा बेच दिया गया है जिसमें पूरा ग्रामीण उपकार किया गया है, उक्त जमीन को किसी दलाल के द्वारा बेच दिया गया है जिससे ग्रामीणों में कांको आक्रोश है बका स जमीन का मालिकाना हक ललिता देवी का बायात गया जो जमीन दलालों के द्वारा आदमी खरीद करने वाले मालिक द्वारा अपने कब्जे में रखा गया है ग्रामीण मांग है कि उक्त स्थल पर समुदायिक भवन अथवा विवाह हॉल बनाया जाएगा, पंचायत के मुखिया रेखा देवी ने बताया कि विवाह मंडप अथवा समुदायिक भवन का निर्माण किया जाएगा या विवाह मंडप, मौके पर पंचायत समिति सदस्य नियोग देवी, पुनम देवी, कांकित देवी, कुती देवी पुनम देवी मूज देवी जलेसरी देवी सरोज देवी मुकेश महतो विनोद महतो आशा देवी, श्यामलाल महतो सुखदेव भागीरथ महतो सहित 50 से अधिक संख्या में ग्रामीणों ने चार दीवारी निर्माण कार्य को रोकवाया और विरोध किया।



विधानसभा आम निर्वाचन-2024 जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त का कार्यालय, हजारीबाग (मीडिया-सह-MCMC कोषांग, समाहरणालय भवन)

पत्रांक : 27 / मी0को, हजारीबाग,

सूचना

दिनांक : 20.10.2024

एतद द्वारा सभी को सूचित किया जाता है कि भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली द्वारा दिनांक-15.10.2024 को विधानसभा आम चुनाव 2024 की घोषणा कर दी गयी है। दिनांक-15.10.2024 से ही आदर्श आचार सहित प्रभावी हो गयी है।

इस संबंध में लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 127क, भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली के दिशा निर्देश के आलाक में निर्मानित अनुपालन आवश्यक है-

1. ऐसी निर्वाचन पुरिटिका /बैनर/पम्पलेट/पोस्टर अथवा अन्य किसी प्रकार का दस्तावेज जिसके मुख्य पृष्ठ पर मुद्रक और प्रकाशकों का नाम अर्पण करता हो, उसे सुदृढ़ित या प्रकाशित करना चाहिए है।
2. सभी मुद्रकों के उपरोक्त दस्तावेजों के स्थिति में प्रकाशित करने पर चारों दो घोषणा पत्र(दो प्रति में) प्राप्त करना अनिवार्य है, जिसपर स्वयं प्रकाशक के हस्ताक्षर एवं दो अन्य विदित(जो उसे प्रदान नहीं हो) द्वारा अभिभावणीत रहें, और मुद्रण कार्य समाप्ति के दो दिनों के अन्दर प्रकाशक के घोषणा पत्र की एक प्रति के साथ, प्रकाशित समाप्ति की प्रति जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त का प्रावधान है।
3. अंत में उत्तराधिकारी जिले के सभी प्रिंटिंग प्रैस के प्रोप्राइटर/प्रकाशक को निर्देश दिया जाता है कि उपरोक्त प्रावधानों का अक्षरश: एवं दृढ़ता से अनुपालन करते हो, प्राय-प्रायर है और एक दूसरे द्वारा निर्वाचन पुरिटिका /बैनर/पम्पलेट/पोस्टर अथवा अन्य किसी प्रकाशक का दस्तावेजों की मुद्रित संख्या, साक्ष्य सहित, पार्टी प्रमुख/उमीदवार का सहानीति पर उसके साथ दो भिन्न विकल्पों द्वारा सत्यापित घोषणा पत्र मुद्रण के दो दिनों के अन्दर प्रकाशित करना सुनिश्चित करेंगे। परिशेष्ट-क एवं परिशेष्ट-ख एवं उपरोक्त दस्तावेजों के साथ समाप्ति पर करना सुनिश्चित करेंगे।
4. अंत में उत्तराधिकारी जिले के सभी प्रिंटिंग प्रैस के प्रोप्राइटर/प्रकाशक को निर्देश दिया जाता है कि उपरोक्त प्रावधानों का अक्षरश: एवं दृढ़ता से अनुपालन करते हो, प्राय-प्रायर है और एक दूसरे द्वारा निर्वाचन पुरिटिका /बैनर/पम्पलेट/पोस्टर अथवा अन्य किसी प्रकाशक का दस्तावेजों की मुद्रित संख्या, साक्ष्य सहित, पार्टी प्रमुख/उमीदवार का सहानीति पर उसके साथ दो भिन्न विकल्पों द्वारा सत्यापित घोषणा पत्र मुद्रण के दो दिनों के अन्दर प्रकाशित करना सुनिश्चित करेंगे।
5. प्रशिक्षण में अनुरोधित रहने वाल कर्मियों के विरुद्ध के सुंसरंग धाराओं के तहत कार्यालय की जायेगी।

PR 339360 Election(24-25) #D

जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त, हजारीबाग

कार्यालय, हजारीबाग

(कार्यक्रम कोषांग)

प्रेस विज्ञप्ति

हजारीबाग जिला अन्तर्गत अवश्यित कैन्सीय सरकार/कैन्सीय लोक उपक्रम/राज्य सरकार के विभागों/कार्यालयों के पदाधिकारियों/कर्मियों को एतद द्वारा सूचित किया जाता है कि भारत निर्वाचन आयोग के आलोक में विधान सभा आम निर्वाचन - 2024 को दृष्टिगत रखते हुए मतदान प्रक्रिया एवं ई. भी. एम. संचालन से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम निर्माणित किया जाता है-

TRAINING PROGRAMS:

Post	Training Name and Date		Place
1st Training	2nd Training		

</tbl

